© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 1, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1732-1737

चालाथेरी के विचारों का वर्तमान में महत्त्व

इन्दु डिमोलिया
शोधच्छात्रा, पीएच.डी.
संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू, विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

शोध आलेख सार–'थेरीगाथा' की थेरियाँ स्वयं ये समझते हुए संसार को उपदेश देती हैं कि यह शरीर हाड-माँस से बना लोथड़ा है, इसे एक दिन नष्ट हो जाना है। इसलिए इसे आध्यात्मिक जीवन की ओर लगाया जाए। आज के भौतिक युग में जहाँ मनुष्य रुपया, पैसा, नाम, पद, प्रतिष्ठा के पीछे भाग-भागकर उस चकाचौंध में अन्धा हो चुका है। मोह-माया में फँसा हुआ है। 'थेरीगाथा' की थेरियों से प्रेरणा लेते हुए उसे स्वयं को प्रकृति को सौंप देना चाहिए।

मुख्य शब्द– मनुष्य, रुपया, पैसा, नाम, पद, प्रतिष्ठा, धीरा, वीरा, मित्ता, भद्रा, उपसमा, मुत्ता, धम्मदिन्ना, विसाखा, सुमना|

थेरीगाथा, खुद्दक निकाय के 15 ग्रंथों में से एक है। इसमें परमपदप्राप्त 73 विद्वान भिक्षुणियों के उदान अर्थात् उद्गार 522 गाथाओं में संगृहीत हैं। यह ग्रंथ 16 'निपातों' अर्थात् वर्गों में विभाजित है, जो कि गाथाओं की संख्या के अनुसार क्रमबद्ध हैं। थेरीगाथा में जिन भिक्षुणियों का उल्लेख आया है, उनमें से अधिकतर तथागत बुद्ध की समकालीन थी। एक इसिदासि के उदान में भव्य नगरी पाटलिपुत्र का उल्लेख आया है। संभवत: वह सम्राट अशोक की राजधानी है। इसलिए ग्रंथ का रचनाकाल प्रथम संगीति से लेकर तृतीय संगीति तक मान सकते हैं।

थेरीगाथा में 72 कविताएँ एवं 522 गाथाएँ हैं। ये गाथाएँ साहित्यिक दृष्टि से अनुपम हैं। इनके पढ़ने से गीति-काव्य के समान आनन्द आता है। इन थेरियों में अञ्ञतरा, मुत्ता, पुण्णा, तिस्सा, अञ्ञतरातिस्सा, धीरा, वीरा, मित्ता, भद्रा, उपसमा, मुत्ता, धम्मदिन्ना, विसाखा, सुमना, उत्तरा, वुड्ढपब्बजितसुमना, धम्मा, संघा, अभिरूपनन्दा, जेन्ता, सुमंगलमाता, अड्ढकासि, चित्ता, मैत्तिका, मित्ता, अभयमातु, अभया, सामा, अपरासामा, उत्तमा, अपराउत्तमा, दन्तिका, उब्बिरी, सुक्का,

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 1, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1732-1737

सेला, सोमा, भद्दाकापिलानी, अञ्ञतरा, विमला, सीहा, सुन्दरीनन्दा, नन्दुत्तरा, मित्ताकाळी, सकुला, सोणा, भद्दाकुण्डलकेसा, पटाचारा, तिंसमत्ता, चन्दा, पञ्चसतमत्ता, वासेट्ठी, खेमा, सुजाता, अनोपमा, महापजापतीगौतमी, गुत्ता, विजया, उत्तरा, चाला, उपचाला, सीसूपचाला, वड्ढमातु, किसागोतमी, उप्पलवण्णा, पुण्णा, अम्बपाली, रोहिनी, चापा, सुन्दरी, सुभाकम्मारधीतु, सुम्भाजीवकम्बवनिका, इसिदासी, सुमेधा इत्यादि 73 थेरियों के माध्यम से अपने अच्छे-बुरे, कटु-मीठे अनुभवों को लयबद्ध किया है।

यहाँचालाथेरीकीगाथाकीवर्तमानमेंप्रासंगिकतापरविचारकियाजाएगा।

मगध में नालक नामक ग्राम में ब्राह्मण-कुल में जन्म हुआ। माता का नाम रूपसारि (या सुरूपसारि) ब्राह्मणी थी। नामकरण-संस्कार के दिन उसका नाम चाला रखा गया। उसकी कनिष्ठ भगिनी का उपचाला और उसकी भी कनिष्ठ भगिनी का शीर्शोपचाला (सीसुपचाला) नाम रखा गया। ये तीनों धर्मसेनापति सारिपुत्र की छोटी बहनें थीं। सारिपुत्र के प्रव्रजित हो जाने पर इन तीनों ने सोचा, "निश्चय ही वह धर्म असाधारण होगा, वह प्रव्रज्या भी असाधारण होगी, जिसमें हमारे भाई सारिपुत्र ने श्रद्धापूर्वक दीक्षा ग्रहण की है।" ऐसा सोचकर उन तीनों ने संसार त्याग कर दिया। एक दिन भिक्षुणी चाला श्रावस्ती में विहार करती हुई भोजनोपरांत मध्याह्न में अंधवन में ध्यान करने चली गई। वहाँ मार (मन का विकार) ने उसे ब्रह्मचर्य के जीवन से पथभ्रष्ट करने के लिए और उसमें काम-वासना जाग्रत करने के लिए उसके साथ वाद रोपा। चाला ने बुद्ध और धर्म के गुणों का वर्णन करते हुए अपनी कृतकृत्यता की अवस्था को दिखाया। मार दु:खी और दुर्मना होकर वहाँ से चला गया। मार के साथ अपने इसी संवाद को गाथाबद्ध करती हुई वह कहती है-

सतिंउपट्ठपेत्वान, भिक्खुनीभावितिन्द्रिया।

पटिविज्झिपदंसन्तं, सङ्खारूपसमंसुखं॥[1]

मुझ भिक्षुणी चाला ने स्मृति को सामने रख कर, (श्रद्धादि) आध्यात्मिक शक्तियों (इन्द्रियों की भावना) का विकास किया, फिर मैंने उस शांत पद का साक्षात्कार किया, जहाँ सभी संस्कार पूर्ण शान्त हो जाते हैं, वही वास्तविक सुख है।

कंनुउद्दिस्समुण्डासि, समणीवियदिस्ससि।

न च रोचेसिपासण्डे, किमिदंचरसिमोमुहा?॥[2]

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 1, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1732-1737

मार : चाला ! किसलिए तूने सिर को मुँडा कर भिक्षुणी का वेश धारण किया है। श्रमणी-सी दिखाई पड़ने वाली ! तू क्यों यह मिथ्या विश्वास स्वीकार किए हुए है? बता, भिक्षुणी ! क्यों तू यह मोहमय आचरण कर रही है?

इतोबहिद्धापासण्डा, दिट्ठियोउपनिस्सिता।

न तेधम्मंविजानन्ति, न तेधम्मस्सकोविदा॥[3]

चाला : मिथ्या मार्ग का अवलम्बन करने वाले, मिथ्या दृष्टियों में फँसे हुए साधुओं से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। वे इस मार्ग से बहिर्भूत हैं। धर्म के सम्बन्ध में वे कुछ नहीं जानते।

अत्थिसक्यकुलेजातो, बुद्धोअप्पटिपुग्गलो।

सोमेधम्मदेसेसि, दिट्ठीनंसमतिक्कमं॥[4]

किंतु शाक्य-कुल में एक बुद्ध उत्पन्न हुए हैं, अप्रतिम पुरुष। उन्होंने मुझे धर्म का उपदेश दिया है, जिसे सुनकर मैंने मिथ्या दृष्टियों को पार किया है।

दुक्खंदुक्खसमुप्पादं, दुक्खस्स च अतिक्कमं।

अरियंचट्ठङ्गिकंमग्गं, दुक्खूपसमगामिनं॥[5]

दु:ख क्या है, दु:ख की उत्पत्ति कैसे होती है और दु:ख का अतिक्रमण कैसे किया जाता है? इसके लिए दु:ख के उपशम की ओर ले जाने वाले आर्य अष्टांगिक मार्ग का उपदेश उन भगवान् ने मुझे दिया है।

तस्साहंवचनंसुत्वा, विहरिंसासनेरता।

तिस्सोविज्जाअनुप्पत्ता, कतंबुद्धस्ससासनं॥[6]

उन भगवान् के उपदेश को सुनकर मैं उनके शासन के अभ्यास में लग गई, मैंने तीनों विद्याओं को प्राप्त कर लिया, बुद्ध के शासन को पूरा कर लिया।

सब्बत्थविहतानन्दी, तमोखन्धोपदालितो।

एवंजानाहिपापिम, निहतोत्वमसिअन्तक॥[7]

सब जगह से तृष्णा नष्ट कर दी गई, अन्धकार पुंज को विदीर्ण कर दिया गया।

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 1, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1732-1737

पापी मार ! प्राणियों का अंत करने वाले ! समझ ले, आज तेरा ही अन्त कर दिया गया। दुष्ट ! तू नष्ट कर दिया गया।

थेरीगाथा में सुख, दु:ख, दु:ख क्या है?,दु:ख के कारण एवं निवारण, आध्यात्मिकता, निर्वाण इत्यादि जीवन के विभिन्न पक्षों को उजागर किया गया है। 'चालाथेरी' कीगाथा में 'मार' अर्थात् 'मनोविकार' से लड़ने के विषय में कहा गया है। आज के समय में इस तथ्य की महती उपयोगिता है। मनुष्य एक-दूसरे के अवगुणों को देखने में इतना व्यस्त है कि वह अपने अन्त:करण के मनोविकारों को नहीं देख पाता है। चाला थेरी के माध्यम से व्यक्ति को सर्वप्रथम अपने मनोविकारों का नाश करने के लिए प्रेरित किया गया है। अपने मन को शुद्ध रखने से आप संसार को एक नई दृष्टि से देखने की ओर अग्रसर होते हैं।

इसीप्रकारउपचालाथेरीकाउदाहरणभीमिलताहैजो चाला की ही छोटी बहन थी। चाला के समान इसने भी अर्हत्त्व प्राप्त कर मार को पराजित किया। मार(मनोविकार) के साथ अपने संवाद को वर्णित करती हुई उपचाला भीकहती है-

सब्बत्थविहतानन्दी, तमोखन्धोपदालितो।

एवंजानाहिपापिम, निहतोत्वमसिअन्तक॥[8]

वासना का सब जगह से विनाश हो गया, अन्धकार-पुंज विदीर्ण हो गया। पापी मार ! सब प्राणियों का अन्त करने वाले ! समझ ले, आज तेरा ही अन्त कर दिया ! तू मार डाला गया।

सीसूपचालाथेरी (शीर्षोपचाला)काभीअपनेमनोविकारोंसेलड़नेकाप्रसंगमिलताहै-

सीसूपचाला धम्म सेनापति सारिपुत्र की सबसे छोटी बहन है। चाला, उपचाला औरसीसूपचाला तीनों सारिपुत्र की बहनें होने के बावजूद भी, तीनों का अपना-2 व्यक्तित्व था। उनके इस व्यक्तित्व के कारण ही तीनों बहनों को बुद्धवचन पालि-त्रिपिटक में इतना बड़ा स्थान मिला है। मार जबउसेलुभानेकाप्रयासकरतीहै, तोवहमारकोफटकारतीहै।

तावतिंसा च यामा च, तुसिताचापिदेवता।

निम्मानरतिनोदेवा, येदेवावसवत्तिनो।

तत्थचित्तंपणीधेहि, यत्थतेवुसितंपुर्॥[9]

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 1, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1732-1737

मार : त्रायस्त्रिंश-लोक के देवगण, यामा देव-लोक के देवगण, तुषितलोक के देवगण, निर्माणरति देवगण और वशवर्ती देवगण, इन सब देव-योनियों के विषयों की तू चिंता कर; पहले तू यहाँ हो आयी है, अब भी तू इन्हीं के भोगों में अपने चित्त को लगा, इनकी अभिलाषा कर।

मार के ये वचन सुनकर भिक्षुणी ने कहा, "मार ! ठहर, सुन, यह काम-लोक की कथा जो तू कहता है, वह तो इस लोक के समान ही तृष्णा, विद्वेष और अविद्या की अग्नि से प्रज्वलित हो रहा है। वहाँ ज्ञानी का चित्त नहीं रम सकता।" फिर मार को फटकारती हुई शीर्षोपचाला अपनी अनासक्ति का वर्णन करती है -

मैंने शास्ता के शासन पर आचरण किया; फित तीनों विद्याओं का मैंने साक्षात्कार कर लिया, बुद्ध के शासन को पूरा कर लिया।

तस्साहंवचनंसुत्वा, विहरिंसासनेरता।

तिस्सोविज्जाअनुप्पत्ता, कतंबुद्धस्ससासनं॥[10]

मेरी सम्पूर्ण वासना का मूलोच्छेद हो गया, अन्धकार-पुंज विदीर्ण हो गया।

पापी मार ! प्राणियों का अंत करने वाले ! समझ ले, आज तेरा ही अंत कर दिया गया। पापी ! तू मार डाला गया-

सब्बत्थविहतानन्दी, तमोखन्धोपदालितो।

एवंजानाहिपापिम, निहतोत्वमसिअन्तका"ति॥[11]

इस प्रकार 'थेरीगाथा' की थेरियाँ स्वयं ये समझते हुए संसार को उपदेश देती हैं कि यह शरीर हाड-माँस से बना लोथड़ा है, इसे एक दिन नष्ट हो जाना है। इसलिए इसे आध्यात्मिक जीवन की ओर लगाया जाए। आज के भौतिक युग में जहाँ मनुष्य रुपया, पैसा, नाम, पद, प्रतिष्ठा के पीछे भाग-भागकर उस चकाचौंध में अन्धा हो चुका है। मोह-माया में फँसा हुआ है। 'थेरीगाथा' की थेरियों से प्रेरणा लेते हुए उसे स्वयं को प्रकृति को सौंप देना चाहिए।

सन्दर्भ सूची–

1.थेरीगाथा, भरतसिंहउपाध्याय, पृ० 57-58

2.थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, पृ० 57-58

© 2018 IJSRSET | Volume 4, Issue 1, January-February-2018
Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099 | Page No : 1732-1737

[3].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, पृ० 57-58

[4].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, पृ० 57-58

[5].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, पृ० 57-58

[6].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, पृ० 57-58

[7].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, पृ० 57-58

[8].**थेरीगाथा, डॉ० विमलकीर्ति, पृ०** 176-178

[9].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, आठवांवर्ग, पृ० 60-61

[11].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, आठवांवर्ग, पृ० 60-61

[12].थेरीगाथा, भरत सिंह उपाध्याय, आठवां वर्ग, पृ० 60-61